



“राजस्थान के जयपुर जिले की द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन”

1. सविता शर्मा, शोधकर्ता, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।
2. डॉ. कीर्ति चौधरी, प्रोफेसर, भूगोल विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।

सारांश :- नदियाँ प्राकृतिक जल के स्रोत के रूप में सदियों से मानव सभ्यता का पोषण करती आ रही हैं। पिछली 2 सदियों से अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि, नगरीकरण एवं औद्योगिकरण से उत्पन्न अतिक्रमण के चलते विश्व की अधिकांश नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं जिसके कारण इनकी पारिस्थितिक एवं सामाजिक उपयोगिता घटती चली जा रही है। शहरी नदियों में अतिक्रमण एवं बढ़ता प्रदूषण का स्तर वर्तमान में वैश्विक स्तर पर नगर नियोजन प्रक्रिया में एक प्रमुख चुनौती है। नदी प्रदूषण से उत्पन्न पारिस्थितिक अवनयन, जैव-विविधता संकट तथा सामाजिक-आर्थिक अवमूल्यन को रोकने के लिए प्रदूषित नदियों के जीर्णोद्धार की आवश्यकता है ताकि इन्हें अपने वास्तविक स्वरूप में पुनः लाया जा सके। यही कारण है कि वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर सरकारें एवं संस्थाएँ तेजी से नदी जीर्णोद्धार परियोजनाओं पर कार्य कर रही हैं।

नदी जीर्णोद्धार परियोजनाओं का स्थानीय नागरिकों के सामाजिक-आर्थिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान के जयपुर जिले की द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस परियोजना ने जयपुर शहर को एक स्वच्छ स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने तथा शहरवासियों के सामाजिक आर्थिक उन्नयन में निश्चित रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

शब्द कुंजी :- जीर्णोद्धार परियोजना, नगरीकरण एवं औद्योगिकरण, प्रदूषण नियंत्रण, सामाजिक आर्थिक उन्नयन, अवसंरचनात्मक विकास।

प्रस्तावना :-

प्रारम्भिक सभ्यताओं के विकास से लेकर आधुनिक काल तक नदियों का मानव जीवन के विकास में अपना अमूल्य योगदान रहा है। नदियों ने मानव समुदायों को पीने युक्त जल, कृषि कार्य हेतु उपजाऊ मैदान तथा आवागमन एवं व्यापार हेतु परिवहन मार्ग प्रदान किए हैं। यही कारण रहा कि मेसोपोटामिया, सिंधु, कालीबंगा एवं नील नदी घाटी जैसी महानतम सभ्यताएं नदियों के किनारे फलीभूत हुई हैं। पिछली दो सदियों से औद्योगिकरण तथा नगरीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति, तीव्र जनसंख्या वृद्धि एवं नदियों के किनारे अनियंत्रित अतिक्रमण के कारण नदियों में प्रदूषण का स्तर बढ़ता चला जा रहा है। अनेक सदावाहिनी नदियाँ अतिक्रमण एवं प्रदूषण के चलते अपना प्राकृतिक स्वरूप खो चुकी हैं तथा जल बहाव अवरुद्ध होने से उनकी पारिस्थितिक एवं सामाजिक उपयोगिता घटती जा रही है।

शहरी नदियों में अतिक्रमण एवं बढ़ता प्रदूषण वर्तमान में वैश्विक स्तर पर नगर नियोजन प्रक्रिया में एक प्रमुख चुनौती है जिसने नगर नियोजनकर्ताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। बढ़ता पेयजल संकट, कृषि कार्य हेतु जल की कमी से उत्पन्न खाद्य असुरक्षा, बढ़ते जलवायु परिवर्तन के खतरे तथा नदी प्रदूषण से उत्पन्न पारिस्थितिक अवनयन, जैव-विविधता संकट तथा सामाजिक-आर्थिक अवनति ऐसे कारण हैं जिनके चलते प्रदूषित शहरी नदियों का जीर्णोद्धार वर्तमान की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। भारत में अनेक राज्यों की सरकारें एवं नियोजनकर्ता शहरी प्रदूषित नदियों के जीर्णोद्धार पर कार्य कर रहे हैं। नदी जीर्णोद्धार से आशय है मानवीय एवं प्राकृतिक कारणों से अपना वास्तविक स्वरूप खो चुकी प्रदूषित नदियों को उनकी पूर्व मौजूदा स्थिति में वापस लाना। इसका मुख्य उद्देश्य नदियों के पारिस्थितिक तंत्र में सुधार लाना तथा जल की गुणवत्ता को बेहतर बनाना है।

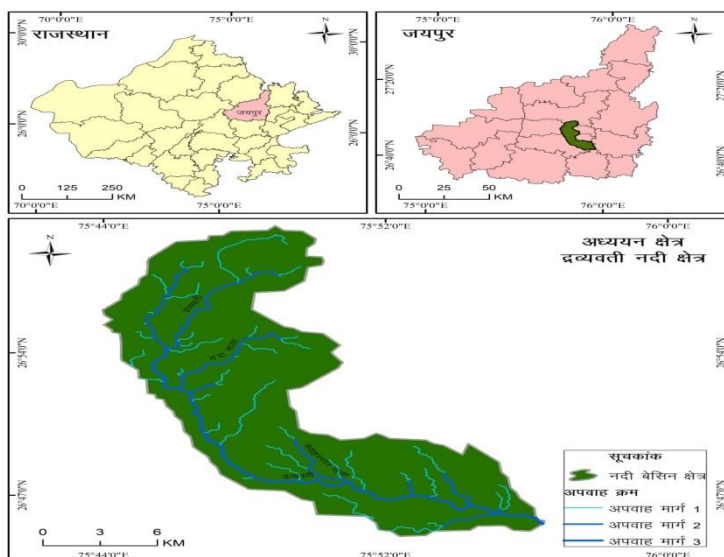
इसी क्रम में राजस्थान के जयपुर शहर की द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना शहरी नदी जीर्णोद्धार का अनुपम उदाहरण है। द्रव्यवती नदी प्राचीन काल से जयपुर की शहरी आबादी को घरेलू तथा कृषि कार्य हेतु वर्ष भर जलापूर्ति करने वाली महत्वपूर्ण नदी थी। पिछले दशक से तीव्र शहरी अतिक्रमण एवं औद्योगिक प्रदूषण के चलते नदी तटों पर घरेलू एवं औद्योगिक अपशिष्ट का जमाव तथा शहरी सीवेज का नदी में खुला प्रवाह होने लगा जिसके कारण शहर की जीवन रेखा कहलाने वाली महत्वपूर्ण जलधारा अपशिष्ट के जमावयुक्त बदबूदार नाले में बदल गई। इसे **अमानीशाह नाला** के रूप में भी जाना जाता है।

द्रव्यवती के अस्तित्व पर व्याप्त संकट को पहचानते हुए सन् 2016 में इसके कायाकल्प हेतु द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना की शुरुआत की गई। परियोजना के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण (JDA) तथा टाटा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड के मध्य महत्वपूर्ण समझौता हुआ तथा 1674 करोड़ रुपये की लागत से द्रव्यवती नदी का पुनरुद्धार कार्य सुनिश्चित किया गया। राजस्थान की तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने दूषित हो चुके अमानीशाह नाले को स्वच्छ कर पुनः जीवन्त बारहमासी नदी के रूप में लाने के अपने संकल्प को पूरा करते हुए 2 अक्टूबर 2018 को इस महत्वाकांक्षी परियोजना का भव्य उद्घाटन किया। परियोजना का मुख्य उद्देश्य नदी में जल प्रदूषण नियंत्रण एवं प्रबंधन तथा बाढ़ के खतरे को कम करना एवं शहर के बीचों-बीच एक आकर्षक रिवरफ्रंट का विकास करना था।

द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना ने जयपुर शहर को एक स्वच्छ स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस परियोजना के क्रियान्वयन से प्रदूषण मुक्त स्वच्छ वातावरण, बेहतर सार्वजनिक सुविधाएं, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, पर्यटन एवं मनोरंजन तथा शहरवासियों के सामाजिक-आर्थिक उन्नयन के रूप में शहरवासियों को अमूल्य सामाजिक-आर्थिक लाभ मिले हैं।

अध्ययन क्षेत्र –

प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान के जयपुर जिले की द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना पर आधारित है। राजस्थान की राजधानी जयपुर $26^{\circ} 55'$ उत्तरी अक्षांश तथा $75^{\circ} 49'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह उत्तर में अलवर तथा सीकर से, पश्चिम में सीकर से, दक्षिण में टोंक, सवाई माधोपुर तथा पूर्व में दौसा एवं भरतपुर जिलों से घिरा है। द्रव्यवती नदी जयपुर के उत्तरी भाग में नाहरगढ़ की पहाड़ियों के पश्चिमी ढाल से निकलती है तथा शहर के मध्यवर्ती भाग में उत्तर से दक्षिण की ओर 47.5 किलोमीटर की लम्बाई में प्रवाहित होती है तथा अंत में दूंद नदी में मिल जाती है। जयपुर शहर की अधिकांश जनसंख्या शहर के मध्यवर्ती भाग में नदी के दोनों ओर 10 किलोमीटर के क्षेत्र में निवास करती है।



अध्ययन क्षेत्र की मानचित्र में अवस्थिति

शोध उद्देश्य :-

1. द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना से जुड़े सामाजिक-आर्थिक मुद्दों की पहचान करना।
2. परियोजना के क्षेत्रीय सामाजिक-आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का आकलन करना तथा प्राप्त परिणामों को उजागर करना।
3. परियोजना के चुनौतीपूर्ण पक्षों की पहचान करना तथा इसके प्रभावी क्रियान्वयन एवं प्रबंधन, गुणवत्ता सुधार एवं दीर्घकालिक सफलता हेतु आवश्यक उपचारात्मक सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि एवं आंकड़ों के स्रोत :-

प्रस्तुत शोध पत्र के अन्तर्गत द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का व्यापक विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक एवं मात्रात्मक शोध पद्धतियों का मिश्रित रूप से प्रयोग किया गया है। यह शोध कार्य प्राथमिक रूप से एक केस अध्ययन पर आधारित है। शोध कार्य में विभिन्न प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

प्राथमिक आंकड़ा स्रोत :-

- क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा परियोजना की वास्तविक स्थिति का आकलन एवं आंकड़े एकत्रित करना।
- प्रतिरूप सर्वेक्षण द्वारा चिन्हित व्यक्तियों से प्रश्नावली द्वारा तथ्य एवं सूचनाएं प्राप्त करना तथा उनका विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त करना।
- परियोजना से जुड़े हितधारकों (सरकारी संस्थाएं, परियोजना प्रबंधक, स्थानीय समुदाय के लोग एवं पर्यावरण विशेषज्ञ से अर्धसंरचित साक्षात्कार प्रक्रिया के माध्यम से सूचनाएं, तथ्य एवं विचार प्राप्त कर विश्लेषण करना।
- परियोजना स्थल का नियमित दौरा करके परियोजना की जल प्रदूषण स्थिति, प्रबंधन कार्य, अवसंरचनात्मक विकास एवं प्रगति तथा सामुदायिक गतिविधियों का आकलन करना।

द्वितीयक आंकड़ा स्रोत :-

- प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं, शोध पत्रों, प्रकाशित रिपोर्ट एवं आलेख तथा विभिन्न सरकारी एवं निजी प्रकाशित स्रोतों से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव :-

शहरी क्षेत्रों में प्रवाहित होने वाली प्रदूषित नदियों के पुनरुद्धार एवं नवीनीकरण का स्थानीय निवासियों के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर व्यापक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इन नवीनीकरण परियोजनाओं के लागू होने के पूर्व एवं पश्चात् की स्थितियों में आमूलचूल परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं जिसके चलते वहां के निवासियों की आय, रोजगार एवं जीवन स्तर पूर्णतया प्रभावित होता है।

द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना ने जयपुर शहर के निवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को बड़े स्तर पर प्रभावित किया है। परियोजना के क्रियान्वयन के बाद स्थानीय निवासियों की स्वास्थ्य दशाओं, रहन-सहन एवं जीवन स्तर, आय एवं रोजगार की दशाओं, पर्यटन एवं मनोरंजन तथा लोगों की मनोस्थिति पर अभूतपूर्व सकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ते हैं।

परियोजना के सामाजिक प्रभाव :-

प्रदूषण नियंत्रण एवं जन-स्वास्थ्य में सुधार :- प्रदूषित नदी की सफाई तथा नदी में गिरने वाले सीवेज युक्त जल के उपचार से नदी में स्वच्छ जल का प्रवाह सुनिश्चित हो पाया है तथा प्रदूषण का स्तर कम हुआ है। सीवेज युक्त जल के उपचार हेतु 170 एमएलडी क्षमता के 5 सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाए गए हैं तथा उद्योगों के प्रदूषित जल का निपटान सांगानेर स्थित सीईटी प्लांट में किया जा रहा है जिससे जल प्रदूषण नियंत्रित हो पाया है। प्रदूषण नियंत्रण से निकटवर्ती क्षेत्रों में स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधित स्थितियों में सुधार हुआ है। प्रदूषित जल जनित रोग कोलेरा, डायरिया तथा मोसमी संक्रमणजनित रोग- डेंगू, मलेरिया एवं चिकनगुनिया पर नियंत्रण हो पाया है। सर्वेक्षण के दौरान 60 प्रतिशत व्यक्तियों ने अभिव्यक्त किया कि द्रव्यवती रिवरफ्रंट के विकास से वायु एवं जल प्रदूषण नियंत्रित हुआ है जिससे जन-स्वास्थ्य में सुधार हुआ है तथा प्रदूषणजनित बिमारिया कम हुई हैं।

बाढ़ नियंत्रण - परियोजना के तहत बाढ़ नियंत्रण एवं जल प्रबंधन की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए गये हैं। जीर्णोद्धार कार्यों के दौरान नदी से अपशिष्ट मलबा, रेत एवं गाद का निष्कासन किया गया है तथा नदी मार्ग में पड़ने वाले बांधों का जीर्णोद्धार किया गया है। नदी मार्ग को 28 किलोमीटर की लम्बाई में वैज्ञानिक विधि से चौड़ा तथा कंक्रीट युक्त चैनल के रूप में पक्का किया गया है जिसके चलते भारी बारिश के दौरान जल के बहाव के लिए एक सुरक्षित मार्ग विकसित हो पाया है तथा जल भराव की समस्या से निजात मिला है। भू-जल संचयन की निरन्तरता को बनाए रखने के लिए चैनल की सम्पूर्ण लम्बाई में नियमित अंतराल पर 102 चैक

डैम एंव 65 गहरे कुओं का निर्माण किया गया है। उपरोक्त जीर्णोद्धार कार्यों से नदी की जलग्रहण क्षमता में वृद्धि हुई है तथा दीर्घकाल के लिए बाढ़ का जोखिम कम हो गया है।

सार्वजनिक सुविधाओं में वृद्धि –

परियोजना के तहत नदी के किनारों पर कुल 6 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में हरित अवसंरचना का विकास किया गया है जिसमें दोनों किनारों पर लगभग 12 हजार वृक्ष, कंक्रीट चैनल के दोनों ओर 3.5 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र में हरित पट्टी तथा 1.03 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र में 3 उच्चस्तरीय उद्यान विकसित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त योगा एवं साईकिल ट्रेक, पैदल मार्ग तथा विभिन्न स्थानों पर बैठक स्थल निर्मित किए गए हैं। इन सभी के चलते स्थानीय लोगों को व्यायाम करने, भ्रमण तथा सामुदायिक गतिविधियों के लिए बेहतर सार्वजनिक स्थान मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान 70 प्रतिशत से अधिक व्यक्तियों ने स्वीकार किया कि वे इन सार्वजनिक सुविधाओं का उपयोग भ्रमण, व्यायाम एवं मनोरंजन के लिए सप्ताह में कम से कम एक बार अवश्य करते हैं।

सामुदायिक एवं सांस्कृतिक उन्नति एवं बेहतर जीवन स्तर :-

परियोजना के तहत सार्वजनिक स्थलों के विकास से स्थानीय निवासियों को सामुदायिक एवं सांस्कृतिक विकास के अवसर मिले हैं। स्थानीय निवासी सार्वजनिक हरित उद्यानों, बैठक स्थलों एवं साईकिल तथा पैदल मार्गों पर शाम के समय तथा सप्ताह के अंत में एकत्रित होते हैं जिससे सामाजिक अन्तक्रिया में वृद्धि होती है। 80 प्रतिशत सर्वेक्षित व्यक्तियों ने सार्वजनिक स्थलों, स्वच्छ एवं मनोरम हरियाली युक्त वातावरण को सामुदायिक एकता तथा बेहतर मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की उपलब्धता में सहायक बताया तथा इस परियोजना के क्रियान्वयन को उनके जीवन स्तर पर सकारात्मक प्रभाव के रूप में आकलित किया है।

परियोजना के आर्थिक प्रभाव :-

भूमि एवं सम्पत्ति के मूल्य में वृद्धि :-

द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना के क्रियान्वयन से शहरी आर्थिक विकास को गति मिली है। पूर्व की तुलना में परियोजना स्थल के निकटवर्ती क्षेत्र की सम्पत्तियों और भूखण्डों के मूल्य में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। स्वच्छ वातावरण तथा बेहतर अवसंरचनात्मक विकास के चलते निवेश की संभावनाएं बढ़ी हैं। रिवरफ्रंट के आस-पास औद्योगिक क्षेत्र, होटल, रेस्तरां एवं बहुमंजिला आवासीय भवनों के निर्माण में वृद्धि हुई है जिससे आवासीय और व्यावसायिक संपत्तियों के मूल्य और किराए की दरों में वृद्धि हुई है। अवसंरचनात्मक विकास, हरित पट्टी एवं सौन्दर्यकरण से रियल एस्टेट कीमतों में वृद्धि हुई है तथा निवेश को प्रोत्साहन मिला है।

रोजगार सृजन –

परियोजना के तहत निर्माण कार्यों में बड़ी संख्या में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न हुआ है। साफ-सफाई एवं रख-रखाव, उद्यान प्रबंधन एवं देखभाल, एसटीपी प्लांट एवं अवसंरचनात्मक प्रबंधन तथा अन्य सेवाओं के क्रियान्वयन से रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। पर्यटन एवं व्यापारिक गतिविधियों के विकास से छोटे-छोटे फेरी विक्रेता, खान-पान की दुकाने आदि के रूप में स्थानीय निवासियों को काम के अवसर मिले हैं। साक्षात्कार के दौरान स्थानीय निवासियों तथा नए व्यापारियों ने रोजगार सृजन जैसे पहलू पर सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

पर्यटन विकास –

गुजरात की साबरमती रिवरफ्रंट के तर्ज पर आधुनिक रूप से विकसित द्रव्यवती रिवरफ्रंट शहर के बीचो-बीच लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन गया है जिससे स्थानीय व्यापार, होटल एवं अन्य सेवा क्षेत्रों को लाभ मिला है। रिवर फ्रंट पर हरियाली, रोशनी तथा मनोरंजन गतिविधियों के चलते स्थानीय एवं बाहरी पर्यटक आकर्षित होते हैं।

सीकर रोड पर द्रव्यवती बर्ड पार्क तथा पम्पहाउस म्यूजियम, टोंक रोड स्थित वनस्पति उद्यान तथा शिप्रापथ मानसरोवर स्थित लैंडस्कैप पार्क एवं एक्सपीरियंस सेंटर प्रमुख पर्यटन केन्द्र हैं। 2019 के बाद द्रव्यवती रिवर फ्रंट जयपुर के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में उभरा है। सर्वेक्षण के दौरान 80 प्रतिशत व्यक्तियों ने इसे हरियाली युक्त आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में स्वीकार किया है।

शहरी विकास एवं उन्नति :-

परियोजना के तहत शहर के समग्र बुनियादी एवं अवसंरचनात्मक ढांचे का विकास हुआ है। शहर के बीचो-बीच स्वच्छ एवं सुन्दर रिवरफ्रंट आकर्षण का केन्द्र बना है। पर्यटन एवं रोजगार सृजन से आर्थिक विकाश को गति मिली है। जल प्रदूषण नियंत्रण एवं प्रबंधन तथा बाढ़ नियंत्रण से दीर्घकालिक सार्वजनिक एवं निजी खर्च कम हुआ है। जयपुर को स्वच्छ एवं ग्रीन स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने में इस परियोजना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रकार यह परियोजना शहर की सामाजिक-आर्थिक उन्नति में सहायक सिद्ध हुई है।

हितधारकों का दृष्टिकोण :-

शोध कार्य को अधिक प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न हितधारकों का साक्षात्कार लिया गया। परियोजना से जुड़े सरकारी संस्थाओं और परियोजना प्रबंधकों ने साक्षात्कार के दौरान परियोजना के क्रियान्वयन एवं भौतिक प्रगति के प्रति सकारात्मक एवं संतोषप्रद विचार प्रस्तुत किए तथा इसे शहर के नवीनीकरण एवं उत्थान की दिशा में सरकार का उचित कदम ठहराया। साथ ही उन्होंने कार्यकारी संस्थाओं के आपसी समन्वय, प्रबंधन तंत्र एवं जन अपेक्षाओं जैसी चुनौतियों को प्रमुख मुद्दा बताया जिस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

→ स्थानीय समुदायों ने परियोजना पर मिली-जुली प्रतिक्रिया व्यक्त की। इन्होंने परियोजना को सामाजिक आर्थिक उन्नति में सहायक बताया तथा इसे दीर्घकाल तक सुचारु रखने पर बल दिया। साथ ही प्रदूषण का पूर्ण समाधान करने की ओर ध्यान आकर्षित किया।

→ पर्यावरण विशेषज्ञों ने प्रदूषण नियंत्रण एवं हरित अवसंरचना के विकास को पारिस्थितिक समृद्धि में सहायक बताया तथा इसके दीर्घकालिक रख-रखाव एवं सतत पर्यावरणीय प्रबंधन पर चिंता व्यक्त की।

निष्कर्ष:-

शोध कार्य के तहत द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना के विश्लेषणात्मक अध्ययन के निष्कर्ष रूप में इसके सकारात्मक सामाजिक-आर्थिक प्रभाव तथा वर्तमान चुनौतियाँ दोनों पक्ष उजागर हुए हैं।

इस परियोजना को लागू करने का मूल उद्देश्य गंदे जल के नाले में तब्दील हो चुकी द्रव्यवती नदी को एक जीवन्त बारहमासी जलधारा के रूप में पुनर्जीवित करना तथा इसे शहरी नदी जीर्णोद्धार के श्रेष्ठ माडल के रूप में प्रस्तुत करना था। शोध कार्य के तहत प्राप्त तथ्यों एवं सूचनाओं के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि इस परियोजना ने जयपुर शहर की दृश्यभूमी में आमूल-चूल परिवर्तन किए हैं। परियोजना के सकारात्मक प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर होते हैं।

❖ जल प्रदूषण नियंत्रण एवं बाढ़ प्रबंधन से जल की गुणवत्ता में सुधार तथा आगामी बाढ़ का जोखिम कम हो गया है। नदी में सीधे ही प्रवाहित होने वाले सीवेज युक्त अपशिष्ट जल को उपचारित करके नदी में स्वच्छ जल का प्रवाह सुनिश्चित किया गया है। परियोजना का मूल उद्देश्य खुले सीवेज के नाले में तब्दील हो चुकी नदी को स्वच्छ जलधारा में परिवर्तित कर स्थानीय पारिस्थितिकी को बचाना था। यह परियोजना इस उद्देश्य की पूर्ति में अधिकांशतः सफल सिद्ध हुई है। यद्यपि जल प्रदूषण पर पूर्णतः नियंत्रण नहीं हो पाया है। मौसमी सीवेज युक्त अपशिष्ट का नदी में प्रवाह पूर्णतः बन्द नहीं हुआ है। जगतपुरा एवं सुशीलपुरा पुलिया के निकट सीवेज का खुला प्रवाह अभी भी जारी है। प्रदूषण पर पूर्ण नियंत्रण दशकों तक चलने वाली लम्बी प्रक्रिया है। इसके लिए परियोजना की निरंतर मॉनिटरिंग एवं प्रभावी प्रबंधन प्रणाली की आवश्यकता है। परियोजना प्रदूषण नियंत्रण के प्राथमिक उद्देश्य की पूर्ति में सफल सिद्ध हुई है। इससे मौसमी बिमारियों एवं दुर्गन्ध में कमी आई है तथा जनस्वास्थ्य में सुधार हुआ है।

❖ परियोजना ने जयपुर शहरवासियों को सामाजिक-आर्थिक स्तर पर निश्चित रूप से लाभान्वित किया है। परियोजना के तहत हरित अवसंरचना तथा सार्वजनिक स्थलों के विकास से बदबूदार अमानीशाह नाला द्रव्यवती रिवरफ्रंट के रूप में शहर के बीच आकर्षण का केन्द्र बन गया है। भूमि एवं सम्पत्ति के मूल्य बढ़े हैं तथा व्यापार, पर्यटन एवं मनोरंजन से स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर मिले हैं। स्थानीय निवासियों में सामाजिक अन्तक्रिया में वृद्धि हुई है तथा शहरवासियों को बेहतर जीवन स्तर मिल पाया है।

परन्तु यह स्पष्ट है कि किसी परियोजना की सफलता केवल अवसंरचनात्मक विकास एवं निर्माण कार्यों तक ही सीमित नहीं रहती अपीतु इसके लिए सतत एवं मजबूत निगरानी एवं प्रभावी प्रबंधन प्रणाली की आवश्यकता होती है। सामुदायिक सहभागिता एवं कुशल प्रशासन से ही परियोजना की दीर्घकालिक उपयोगिता सुनिश्चित हो सकती है तथा यह भी आवश्यक है कि परियोजना के लाभ प्रत्येक व्यक्ति की समान पहुँच में रहे तथा सुनियोजित प्रबंधन प्रणाली दीर्घकाल तक कायम रहे।

सुझाव :- द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना जयपुरवासियों के सामाजिक-आर्थिक एवं सतत पर्यावरणीय विकास की दृष्टि से राज्य सरकार का एक महत्वपूर्ण प्रयास है जो कि अपने अधिकांश प्राथमिक उद्देश्यों को पूर्ण करने तथा नदी के कायाकल्प में सफल सिद्ध हुई है। परन्तु किसी परियोजना की पूर्ण सफलता दशकों तक किए गए अनवरत प्रभावी प्रयासों पर निर्भर करती है। इस शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर परियोजना की दीर्घकालिक एवं पूर्ण सफलता हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

1. शेष रहे प्रदूषण स्रोतों की पहचान कर पूर्ण निस्तारण करना – नदी में अनाधिकृत रूप से गिरने वाले दुषित जल के नालों तथा सीवेज के खुले अनुपचारित प्रवाह को पूरी तरह से बंद किया जाना चाहिए। सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापित क्षमता बढ़ाई जानी चाहिए ताकि नदी में पूर्णतः उपचारित जल ही प्रवाहित किया जा सके। स्थापित संयंत्रों की नियमित निगरानी की जानी चाहिए ताकि गुणवत्ता मानकों में कोई कमी न रहे।

2. परियोजना की निरन्तर एवं प्रभावी मॉनिटरिंग के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण तथा जयपुर नगर निगम के सम्मिलित उपायों से एक समर्पित निगरानी समिति निर्मित की जानी चाहिए ताकी समय-समय पर परियोजना की खामियों एवं गुणवत्ता मानकों की जांच की जा सके तथा नदी के स्वरूप को स्वच्छ बनाए रखा जा सके।
 3. परियोजना की दीर्घकालिक सफलता सुनिश्चित करने के लिए जनभागीदारी एवं जनजागरुकता अति आवश्यक है। स्थानीय नागरिकों को लाभकारी प्रक्रिया के तहत परियोजना के रख-रखाव से जोड़ा जाना चाहिए, ताकि वे इसे अपनी सम्पत्ति मानकर सुरक्षा करें। यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए की परियोजना के लाभ सभी स्थानीय नागरिकों को मिलने चाहिए ना कि निविदा प्रक्रिया के तहत किसी व्यक्ति या समुदाय विशेष को लाभ पहुंचाया जाए।
 4. रिवरफ्रंट के किनारे कई स्थानों पर अनौपचारिक आवासीय बस्तियों का जमाव हो गया है। इन अनाधिकृत आवासों को वहाँ से हटाकर सुनियोजित पुनर्वास की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि परियोजना स्थल पर बढ़ते अतिक्रमण एवं प्रदूषण को रोका जा सके। इस कार्य हेतु राजकीय प्रशासन तथा परियोजना प्रबंधन तंत्र को मिलकर सुदृढ़ कार्यवाही करनी होगी।
- निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि द्रव्यवती नदी जीर्णोद्धार परियोजना की पूर्ण सफलता अन्य सभी शहरी प्रदूषित नदियों के जीर्णोद्धार हेतु प्रेरक उदाहरण सिद्ध हो सकती है। इस परियोजना ने जयपुरवासियों के सामाजिक-आर्थिक विकास एवं शहरी जीवन के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. Sachdeva, Himanshi. & Mehta, Ar. Bhavya. (2025). Evaluating the Ecological and social Dimensions towards Sustainability: A case of Dravyavati River Revitalization, Jaipur.
2. Randhawa, Aman. & chandra, Tarush. (2017). Revitalization of Dravyavati River, Jaipur, India: A water-front development Project.
3. Meena, Rajeev Ratan and Varshney, Dr. Mayank, Flowing Towards sustainability: Evaluating the Ecological and Social Dimensions of Drayavati River Revitalization.
4. City Development plan for Jaipur, chapter-2. Jaipur municipal Corporation.
5. <https://www.patrika.com/jaipur-news/public-will-get-benefit-of-dravyavati-river-project-7429555>.
6. Projects, T. (2020). Restoration of Dravyavati River in jaipur, Rajasthan. Jaipur.
7. www.Tatapprojects.com
8. www-patrika.com.cdn.amproject.org
9. @Tatapprojectsoffical.